Social Science

Special Issue

"(Global Partnership: India's Collaboration Initiatives for Economic and Social Growth)"

वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की ऐतिहासिक भूमिका : एक विश्लेषण

तरुण प्रकाश

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, दमयंती राज आनंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence Author: तरुण प्रकाश

सारांश

वैश्विक अर्थव्यवस्था का वर्तमान स्वरुप में आना एक लम्बी एतिहासिक प्रक्रिया के माध्यम से संपन्न हुआ है। यद्यपि आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के परस्पर जुड़ाव की मात्रा एवं प्रकृति को इतिहास में खोजना सम्भव नहीं है तथापि विभिन्न देशों के व्यापारिक, सांस्कृतिक एवं राजनितिक सम्बन्धो को जानना दुष्कर नहीं है। प्रस्तुत शोध पत्र भारत के शेष विश्व के साथ आर्थिक सम्बन्धो पर केन्द्रित है सांस्कृतिक पक्ष को इसलिए सम्मिलित नहीं किया गया है क्योकि इतने विस्तृत कालखंड के लिए व्यापारिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक सम्बन्धो को सहेजकर शोध पत्र को निर्धारित शब्दों में प्रस्तुत करना सम्भव नहीं है।

मूलशब्द: वैश्विक अर्थव्यवस्था, आर्थिक सम्बन्ध, व्यापार, विश्व इतिहास, व्यापारिक सम्बन्धों का इतिहास, सामाजिक इतिहास, विविधता।

परिचय

प्राचीन भारत के शेष विश्व के साथ आर्थिक सम्बन्धो को मुख्यत: व्यापार व वाणिज्य के साथ प्रस्तुत किया गया है। चूँकि पुराने समय में आर्थिक संबंधों का स्वरुप इतना विविध एवं बहुआयामी नहीं होता था। यदि यह कहा जाये कि प्राचीन वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के आपसी जुड़ाव का मुख्य तत्व व्यापार था तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। अन्य देशों के साथ भारतीय व्यापार एवं अर्थव्यवस्था के अध्ययन को मोटे तौर पर निम्न काल खण्डों में बांटा जा सकता है।

1. तुर्कों के आगमन से पूर्व
2. सल्तनत और मुग़ल काल
3. ईस्ट इण्डिया कंपनी और ब्रिटिश शासन के अधीन
4. 1947 से 1991 तक
5. 1991 से फरवरी 2024

अर्थव्यवस्थाओं का स्वरुप विभिन्न कालखण्डों में भिन्न–भिन्न रहा है। पृथ्वी पर पहले–पहल मानव ने कृषि, पशुपालन व स्थायी ग्राम्य जीवन की आधारशिला नवपाषण काल में रखी। आत्मनिर्भर एवं निर्वाह अर्थव्यवस्था प्राचीन वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं का एक मुख्य अभिलक्षण था। प्रथम चरण के दौरान वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं का स्वरुप कमोवेश कृषि आधारित था। सीमित भौगोलिक ज्ञान, सीमित संचार माध्यमों एवं अल्प विनिर्माण गतिविधियों के बावजूद भी भारतीय उपमहाद्वीप ने पश्चिम में अरब देशों व मिस्र व पूर्व में चीन, जावा, सुमात्रा आदि देशों से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किये। यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि इस चरण में भारत के वैश्विक अर्थव्यवस्था में योगदान को मुख्यतरू व्यापार से रेखांकित किया जाय। इस चरण में भारत ने जो योगदान दिया उसका प्रमाण ई०पू० 2350 में सिंधु सभ्यता के मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक सम्बन्ध है। हड़प्पा सभ्यता के व्यापारिक सम्बन्ध अफगानिस्तान, ईरान, मेसोपोटामिया, मध्य एशिया, बहरीन, द्वीप, मिस्र, क्रीट से घनिष्ठ थे। इन व्यापारिक संबंधो की पुष्टि पुरातात्विक एवं लिखित सामग्री से होती है। उदाहरण के लिए लोथल से फारस की मोहर, उर की खुदाई में हड़प्पा मूल का श्रृंगारदान, मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर जिस पर सुमेरियन नावों के चित्र है। इन पुरातात्विक सामग्रियों की पुष्टि अखिलेखीय साक्ष्यों से भी होती है जैसे सारगोन युग (ई०पू०23वी सदी) के सुमेरियन लेख में "मेलुहा" शब्द का उल्लेख है जिसकी पहचान सिंघु प्रदेश से की गयी है। पूर्व वैदिक काल एवं वैदिक काल में व्यापार में गिरावट दर्ज की गयी क्योंकि वैदिक समाज पशुपालन एवं कृषि आधारित ग्राम्य समाज था जिसकी पुष्टि वैदिक ऋचाओ से होती है जिनमे अधिकांशतया पशुधन एवं अच्छे कृषि उत्पादन की प्रार्थना की गयी है।

सिंधु सभ्यता के पतन के पश्चात भारत में आर्थिक क्रियाकलापों व व्यापार वाणिज्य की प्रगति द्वितीय नगरीकरण या महाजनपद काल के समय देखने को मिलती है इस समय व्यापार वाणिज्य कितना विकसित था इसका प्रमाण उस समय श्रेणी, निगम आदि व्यापारिक संगठनों की उपस्थति है। ध्यातव्य है के इसी समय भारत में सर्वप्रथम धातु के सिक्कों (चाँदी के आहत सिक्के) की शुरुआत हुई जिसने मौद्रिकृत अर्थव्यवस्था के उदय में महतवपूर्ण भूमिका निभायी। ई०पू०छठी शताब्दी में ही भारत की समृद्धि से प्रभावित होकर अखामिनी शासक डेरियस प्रथम या दारा प्रथम ने सिंध व पंजाब को विजित किया एवं पंजाब एवं सिंध को अपने साम्राज्य का 20वां प्रांत बनाया और इस प्रदेश से दारा को अपने संपूर्ण राजस्व का तीसरा भाग प्राप्त होता था जो कि भारत की समृद्धि का परिचायक है डॉ०आर एस शर्मा के अनुसार दारा की इस विजय के कारण ही यूनानियों को भारत की संपदा के विषय में जानकारी मिली और जिसे प्राप्त करने के लोभवश ही कालांतर में सिकंदर महान ने आक्रमण किया इसी दौरान दारा के एक सेनापति स्काईलेक्स ने भारत से पश्चिमी देशों तक एक समुद्री मार्ग की खोज की जिससे भारत एवं पश्चिमी एशिया व दक्षिण यूरोप के बीच समुद्री व्यापार के रास्ते खुले। इसी प्रकार मौर्यों के अधीन भी वैदेशिक व्यापार उन्नत दशा में था इस समय भारत का विदेशी व्यापार सीरिया मिस्र तथा अन्य पाश्चात्य देशों से था यूनानी रोमन लेखक एरियन हमें बताता है कि भारतीय

व्यापारी यूनान के साथ मुक्ता का व्यापार करते थे अर्थशास्त्र में विदेशी सार्थवाहों, चीनी मूल कौशेय तथा नेपाल के कम्बल का उल्लेख है साथ ही आर्थिक क्रियाकलापों को नियंत्रित करने वाले अनेक अधिकारियों (अध्यक्षों) का उल्लेख है ,जो कि उन्नत व्यापार का सूचक है। ई०पू० द्वितीय शताब्दी में पश्चिमोत्तर भारत को इंडो ग्रीक, कुषाण एवं शकों ने विजित किया जिससे भारत के पश्चिमी एवं मध्य एशिया से घनिष्ठ संबंध स्थापित हो गए। मौर्यों द्वारा विकसित आंतरिक व्यापार मार्गों को आधार बनाकर कुषाणों ने भारतीय व्यापार व वाणिज्य को गति प्रदान की। इस समय के सबसे महत्वपूर्ण स्थल व्यापारिक मार्ग (रेशम मार्ग) कुषाणों के राज्य से गुजरता था और एशिया को फारस, अरब देश, भूमध्य सागर एवं यूनान के साथ जोड़ता था। इस प्रकार कुषाण काल में भारत ने वैश्विक व्यापार में महतवपूर्ण भूमिका निभाई। ई०पू० प्रथम सदी के उत्तरार्ध में रोमन साम्राज्य के सर्व शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में उदय से भारतीय व्यापार की अत्यंत प्रगति हुई भारत में बनी विलासिता की सामग्री का बड़ा उपभोक्ता बाजार पूर्वी रोमन साम्राज्य हुआ करता था पहली सदी के एक अज्ञात नाविक द्वारा लिखित पेरी प्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी में रोमन साम्राज्य को निर्यात किए जाने वाले सामानों का विवरण दिया गया है। विदित है कि रोमन साम्राज्य द्वारा उत्पन्न मांग जब भारत के मसाले से पूर्ण नहीं हुई तो भारतीय व्यापारियों ने दक्षिण पूर्व एशिया से संपर्क बढ़ाये और मध्यस्थ की भूमिका में रोमन साम्राज्य को मसाले की आपूर्ति की। भारत का रोम के साथ व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में था जिसका प्रमाण प्लिनी द्वारा भारत को किए जाने वाले भारी भुगतान (सोना और चांदी) पर दुःख प्रकट किया जाना है। एक समकालीन बौद्ध ग्रन्थ महावस्तु में 36 विभिन्न प्रकार के शिल्पों का उल्लेख है। मिलिंदपन्हो नामक बौद्ध ग्रंथ में 75 व्यवसायों का उल्लेख है जो की अलग–अलग संगठित थे इन संगठनों को श्रेणी कहा जाता था तथा श्रेणी के सभी सदस्यों को श्रेणी के बनाये नियम मानने पड़ते थे कहने का तात्पर्य यह है कि यह सब प्रमाण बड़ती विनिर्माण गतिविधियों व उन्नत व्यापार व वाणिज्य की ओर इशारा करते है। गौर करने योग्य है कि जिस कार्य विभाजन और विशिष्टीकरण का प्रतिपादन प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक वेल्थ ऑफ़ नेशन (1776) में किया वह कार्य विभाजन एवं विशिष्टीकरण ई० पू० 600 से भारत में अस्तित्वमान व्यापारिक श्रेणियों एवं निगमों में देखा जा सकता है।

प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में स्थापित कुषाण साम्राज्य की भौगोलिक स्थिति इतनी महत्वपूर्ण थी कि वैश्विक व्यापार को नियंत्रित करने वाले सिल्क मार्ग की तीनों शाखाओं पर कुषाणों का नियंत्रण था जो समकालीन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का स्नायु तंत्र हुआ करता था इस दौरान भारत ने तीन समकालीन महान साम्राज्य–चीन साम्राज्य, फ़ारसी साम्राज्य एवं रोमन साम्राज्य की अर्थव्यवस्थाओं में व्यापार के माध्यम से अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई विदित है कि ई० पू० और इसकी आरंभिक शताब्दियों में रोम से भारी मात्रा में आने वाले स्वर्ण का उपयोग भारत में मुद्रा ढालने के काम आता था जिस वजह से मौद्रिकृत अर्थव्यवस्था के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। दक्षिण भारत के संगम कालीन राजवंशों चोल, चेर एवं पांड्य ने भी विदेशी व्यापार में महत्वपूर्ण योगदान दिया संगम काल में विशेष समृद्धि का कारण विदेशी व्यापार था चोल साम्राज्य का पुहार, चेर साम्राज्य का बंदर व पांड्य साम्राज्य का शालियूर बंदरगाह विशिष्ट रूप से विदेशी व्यापार के लिए प्रसिद्ध थे संगम साहित्य एवं पुरातात्विक सामग्री से यह स्पष्ट होता है कि रोम और यूनान के साथ दक्षिण भारत का व्यापार अत्यंत उन्नत था तथा पश्चिमी देशों को काली मिर्च, हाथीदांत, मोती, मलमल, रेशमी कपड़े व अन्य मसलों का निर्यात किया जाता था भारतीय महीन सूती कपड़ा इस समय विश्व में प्रसिद्ध था अगस्टस तथा टिबेरियस की मोहर वाले और नीरो (54–68 ई०) के सोने और चांदी के सिक्के तमिल प्रदेश के अनेक स्थलों से प्राप्त हुए हैं तमिल राज्यों ने न सिर्फ पश्चिम में अपितु पूर्व में मलाया द्वीप समूह और चीन के साथ घनिष्ठ व्यापारिक संबंध स्थापित किये।

प्राचीन भारत के शक्तिशाली गुप्त साम्राज्य के अधीन व्यापार वाणिज्य की स्थिति अच्छी रही किंतु पूर्व के कुषाण काल से तुलना की जाए तो यह दौर विदेशी व्यापार में गिरावट का था जिसकी वजह गुप्त काल में बढ़ता सामंतीकरण एवं 364 ई० पू० में रोमन साम्राज्य का दो भागों में बट जाना था ध्यातव्य है कि फारसी और रोमन साम्राज्य की शत्रुता की वजह से स्थल मार्ग से व्यापार करना भारतीयों के लिए कठिन हो गया चूँकि फारसी साम्राज्य भारत एवं रोम का मध्यवर्ती था फिर भी भारतीयों ने इस कमी को पूरा करने हेतु इथोपिया से संबंध विकसित किया और रोमन सम्राट जस्टिनियन ने इथोपिया के राजा हैल्लैस्थायास से समझौता किया ताकि भारत और रोमन साम्राज्य के बीच व्यापार में बाधा ना पड़े। पूर्व में श्रीलंका, भारत और चीन के व्यापार में मध्यस्थ की भूमिका निभाता था। गुप्तकालीन ग्रंथ अमरकोश में विभिन्न प्रकार के शिल्पो का उल्लेख है तथा पूर्व की भांति श्रेणी व्यवस्था गुप्त काल में भी जारी रही गुप्त काल से लेकर सल्तनत काल के बीच के समय में उत्तर भारत के विदेशी व्यापार में गिरावट महसूस होती है किंतु दक्षिण भारत के राष्ट्रकुट, चालुक्य एवं पल्लव राजाओं ने इस कालखंड में चीन, दक्षिणी पूर्व एशिया व पश्चिम एशिया के साथ अभूतपूर्व विदेशी संबंध विकसित किए एवं व्यापार वाणिज्य को गति प्रदान की। चोल शासक राजराज, राजेंद्र प्रथम एवं कुलोत्तुंग ने चीन में अपने व्यापारिक दूत मंडल भेजें इन प्रयासों से चीन से इतनी मात्रा में सोना भारत आने लगा कि चीन को दक्षिण भारत के साथ होने वाले व्यापार पर प्रतिबंध लगाना पड़ा जैसा कि रोमन साम्राज्य ने ई० सदी के आरंभ में किया था इस प्रतिबंध का उल्लेख चीनी लेखक चाऊ–जू–कुआ के विवरण से स्पष्ट होता है।

सातवीं शताब्दी से दसवीं शताब्दी तक का काल भारत तथा अरब देशों के बीच व्यापार का स्वर्ण युग था विदित हो कि भारतीय शासको ने सदैव विदेशी व्यापारियों के प्रति सम्मानजनक व्यवहार किया दक्षिणी भारत के शासको ने मुसलमान व्यापारियों को बड़े–बड़े शहरों में भूमि प्रदान की ताकि वह वहां बस जाएं और अपने लिए मकान धार्मिक स्थान व कब्रिस्तान आदि बना सके अल इदरीसी के 12वीं सदी के वर्णन से ज्ञात होता है कि भारत में चोरों को मृत्युदंड दिया जाता था जो कि व्यापारियों को आश्वस्त करने और निर्भीक होकर व्यापार संचालित करने में मदद करता था। समकालीन राजपूत राजाओं के भी अरब देशों से व्यापारिक संबंध विकसित अवस्था में थे क्योंकि अरबी घोड़े की मांग सदैव राजपूत राजाओं को बनी रहती थी क्योंकि अरबी घोड़े उस समय सर्वोत्तम माने जाते थे क्योंकि उनकी तीव्र गतिशीलता न सिर्फ युद्ध बल्कि स्थल मार्ग से द्रुतगति से दूरी तय करने के लिए आवश्यक थी।

तुर्को द्वारा दिल्ली सल्तनत की स्थापना से पूरे उत्तरी भारत में एक सशक्त शासन व्यवस्था का उदय हुआ एवं व्यापर व वाणिज्य की प्रगति हुई जो कि गुप्तोत्तर काल के राजनीतिक विखंडीकरण के बाद की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी तुर्कों के आगमन से कृषि के साथ–साथ अनेक उद्योगों धंधों का विकास हुआ दिल्ली सल्तनत में सुल्तानों एवं अमीर वर्ग की आवश्यकताओ की वस्तुओं का उत्पादन राज्य के नियंत्रणाधीन स्थापित कारखानों में होने लगा। इन आर्थिक गातिविधियो से शहरीकरण व विदेशी व्यापार में तीव्र वृद्धि हुई। दिल्ली के सुल्तानों ने कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रयास किए जैसे कि अलाउद्दीन ने राजस्व सुधार, गयासुद्दीन तुगलक ने कृषि सुधार तथा फ़िरोज़ शाह तुगलक के द्वारा नहरों का बनवाया जाना,1200 बागो का लगवाना एवं राज्य नियंत्रित कारखानों में दासों को नियोजित करना आदि। सुल्तानों के इन प्रयासों से कृषि उत्पादन

में वृद्धि हुई एवं वस्तु निर्माण की गतिविधियों को बढ़ावा मिला तथा आंतरिक एवं विदेशी व्यापर की प्रगति हुई।

इब्नबतूता बताता है कि मोहम्मद तुगलक के काल में व्यापारिक गतिविधियां अत्यंत समृद्ध थी लोदी शासक तो स्वयं व्यापारी थे और उन्होंने व्यापार में स्वयं रुचि ली। इस प्रकार हम देखते है कि संपूर्ण सल्तनत काल में आंतरिक और विदेशी व्यापार अति समृद्ध रहा तथा चीन, मध्य एशिया, रूस, मिस्र, तुर्की, पूर्वी अफ्रीका, अरब देश, फारस, मलाया, लंका, हिन्द चीन, वर्मा, जापान प्रमुख व्यापारिक साझीदार थे। आयातित वस्तुओं में घोड़े, दास–दासियाँ, विशेष प्रकार के वस्त्र, मेवे, तथा फल इत्यादि थे जबकि निर्यातित सामान में लोहा व लोहे की बनी तलवारें (हिंदवी तलवारें) ,सूती वस्त्र, शक्कर, नील, जड़ी बूटियां, मसाले, फल, जानवर, हाथी, केशर, कस्तूरी, तांबा आदि थे। सुल्तानों ने न सिर्फ मार्गों को सुरक्षित किया अपितु अलाउद्दीन जैसे शासको ने तो व्यापारियों को अग्रिम प्रदान किया ताकि वह भारत में बाहर से माल खरीद कर ला सके। समकालीन लेखक बार्थेमा ने विभिन्न देशों से प्रतिवर्ष खंभात आने वाले 300 विदेशी जहाजों का उल्लेख किया है। ज्ञात हो के 16वी शताब्दी में पुर्तगालियों के आगमन पूर्व हिन्द महासागर के व्यापार पर भारतीय व्यापारियों का प्रभुत्व कायम रहा। जैनी, मारवाड़ी, वोहरा, मुल्तानी व खुरासानी व्यापारी भारत व अन्य देशों के बीच प्रमुख भूमिका निभाते थे। समकालीन विजय नगर व बहमनी साम्राज्यों ने भी विदेशी व्यापार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इटली के यात्री निकोलो कोंटी, अरबी सौदागर अब्दुल रज्जाक, चीनी यात्री माहूआन, वास्कोडिगामा, वार्बोसा, पायस, नुनिज़ एवं निकितिन ने इन राज्यों के समृद्ध व्यापार के अनेक वृत्तांत लिख छोड़े है। मध्यकाल में दक्षिण भारत के कोरोमंडल तट के त्रिपक्षीय व्यापार व मालाबार की काली मिर्च के व्यापार का अत्यधिक महत्व था। इस त्रिपक्षीय व्यापार में भारतीय व्यापारी पूर्व के द्वीप समूहों से कपड़े के बदले मसाले का आयात करते थे एवं फिर इनका निर्यात यूरोपीय देशों को किया जाता था।

16वी सदी में मुग़ल शासन की स्थापना एवं भारत में यूरोपियन कंपनियों के आगमन से व्यापार व वाणिज्य में और अधिक वृद्धि हुई यह वृद्धि न सिर्फ माल के परिमाण अपितु नए–नए क्षेत्रों में भारतीय सामान के प्रवेश के रूप में हुई। डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी, ऑस्ट्रियाई, जर्मन, डेनिस व्यापारियों ने भारतीय माल को यूरोप के प्रत्येक कोने में पहुचाने का काम किया दूसरी ओर इस काल में तीन शक्तिशाली एशियाई साम्राज्यों–मुगल, शफवी और उस्मानी के उदय तथा चीन के मिंग साम्राज्य की उपस्थिति भी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार व वाणिज्य के अनुकूल थी इस समय संपूर्ण एशिया में शांति स्थापित हुई, कानून व्यवस्था अच्छी हुई जो अंततरू व्यापार, वाणिज्य, शहरीकरण व मौद्रिकरण के अनुकूल थी संयुक्त आधार पर निर्मित एवं संचालित यूरोपीय कंपनियों की विक्रय एवं वितरण व्यवस्था विश्वव्यापी थी। अब भारतीय माल अमेरिका के बाजारों में भी पहुंचने लगा प्रसिद्ध विद्वान फर्ना ब्रोदेल के अनुसार एक विश्व व्यापी अर्थव्यवस्था के उदय का श्रेय यूरोपीय कंपनियों को दिया जाना चाहिए जिन्होंने यूरोप और एशिया की अर्थव्यवस्थाओं और अमेरिका की चांदी में नजदीकी तालमेल स्थापित किया। विदित है कि समकालीन यूरोपीय राज्यों द्वारा अनुसरित वाणिज्यवादी व्यापारिक नीति के बावजूद यूरोपीय कंपनियां जो सोना चांदी विश्व के अन्य देशों के साथ व्यापार के माध्यम से अर्जित करती थी, उसके अधिकांश भाग को भारत में लाने को विवश थी जोकि अंततः मुगल टकसालों में पिघल कर मुगल सिक्कों में बदल जाता था क्योंकि यूरोपीय कंपनियां भारतीय माल के बदले भुगतान चांदी और सोने के रूप में करती थी इस स्थिति में बदलाव तब आया जब इन कंपनियों में से सफल एक कंपनी (ईस्ट इंडिया कंपनी) ने भारत पर राजनीतिक नियंत्रण स्थापित कर लिया एवं भारतीय मुनाफे से ही माल खरीदना शुरू कर दिया और यहीं से आरंभ होता है धन निकास। मुगल काल में आयात सीमित था और निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में नील, सूती वस्त्र, विनिर्मित वस्तुएं आदि थी गौर करने योग्य है कि मुगल काल में भारत का सकल घरेलू उत्पाद वैश्विक अर्थव्यवस्था के सकल उत्पाद का 24.4 प्रतिशत था जबकि संपूर्ण यूरोप का हिस्सा 23.30 प्रतिशत था। जो की मुगल काल की समृद्ध आर्थिक स्थिति को दर्शाता है मुगल काल में व्यापार वाणिज्य की स्थिति का वर्णन वर्नियर और ट्रेवर्नियर के विवरणों में मिलता है, जो बताते है कि व्यापार में न सिर्फ व्यापारी अपितु शाही परिवार के सदस्य भी संलग्न थे और उनके पास अपने जहाज होते थे जहांगीर, नूरजहां, शहजादा खुर्रम शहजादे दारा और औरंगजेब के अपने निजी जहाज थे इस समय भारतीय व्यापार वाणिज्य दक्षिण पूर्व एशिया पश्चिम एशिया यूरोप अफ्रीका और अमेरिका के साथ था मुगल काल में यूरोपीय कंपनियों के आगमन से ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत पर राजनीतिक नियंत्रण स्थापित करने तक तो भारतीय अर्थव्यवस्था को विस्तार मिला किंतु ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के अधीन और बाद में ब्रिटिश शासन के अधीन भारतीय अर्थव्यवस्था एक बुरे दौर से गुजरी। कंपनी और ब्रिटिश औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों ने भारत में गरीबी, ग्रामीणीकरण, कृषि के वाणिज्यीकरण, दस्तकारी उद्योगों के विनाश का कार्य किया यद्यपि यह स्थिति उपनिवेश के आर्थिक हितों के खिलाफ थी किंतु ब्रिटेन और बाकी विश्व के लिए अच्छी थी क्योंकि भारत के कच्चे माल के बलबूते ही ब्रिटेन ने ओधोगिक क्रांति को सफल बना सका। दूसरी ओर भारत ने ब्रिटेन में निर्मित उत्पादों को खपाने के लिए भारतीय बाज़ार उपलब्ध हो गया जो औद्योगिक क्रांति को सफल बनाने में परोक्ष एवं महत्वपूर्ण कारक रहा। बहरहाल जिस भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार पहली सदी में सकल वैश्विक उत्पादन के 32.9 प्रतिशत के बराबर था मुगल काल में 24.40 प्रतिशत के बराबर था आजादी के बाद मात्र 3.8 प्रतिशत रह गया आंकड़े प्रसिद्ध कैंब्रिज आर्थिक इतिहासकार एंगस मेडीसन के हैं।

आजादी के बाद भारत की अर्थव्यवस्था पूरी तरह जर्जर अवस्था में थी और उसके समक्ष गरीबी, निरक्षरता, पूंजी का अभाव,मूलभूत उद्योगों की अनुपस्थिति, भुखमरी जैसी समस्या थी किंतु हमारे राजनीतिक नेतृत्व ने भारत के तत्कालीन उद्योगपतियों के साथ मिलकर एक मिश्रित अर्थव्यवस्था एवं समाजवादी रूझान वाली आर्थिक नीति तैयार की तथा भारत के विकास की नीव रखी। अपनी तमाम सफलताओं असफलताओं के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर साल 1991 तक निम्न ही बनी रही जिसे अक्सर उपेक्षा भाव से हिंदू वृद्धि दर से सम्बोधित किया जाने लगा। भारतीय अर्थव्यवस्था में वास्तविक सुधार 1991 में अपनाए गए सुधारों के बाद संभव हुआ, जब भारत को अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक संगठन के दबाव में अपनी पुरानी समाजवादी मिश्रित अर्थव्यवस्था की जगह अधिक खुली आर्थिक नीति अपनानी पड़ी और अपने बाजारों को विदेशी आयातों एवं पूंजी निवेश के लिए खोलना पड़ा।

उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण जैसे सुधारों के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और उतरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर है भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर सुधारों के पश्चात 6.24 प्रतिशत वार्षिक रही है जो की 1951 से 91 के दौरान 4.34 प्रतिशत वार्षिक हुआ करती थी भारतीय नागरिकों के लिए यह जानना बेहद सुखद होगा कि पिछले 10 वर्षों अर्थात 2013 से 23 के दौरान भारत की चक्रवृद्धि सकल घरेलू उत्पाद वार्षिक दर 7.5% रही है और भारत विश्व की सबसे तेजी से वृद्धि करने वाली अर्थव्यवस्था रहा है हमारे देश ने अपने गुलामी के धब्बों को मिटाते हुए न सिर्फ अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारा है अपितु वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण रोल अदा किया है। आज भारत विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में पांचवें क्रम पर है पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था होने से भी सुखद बात यह है कि भारत ने ब्रिटेन को प्रतिस्थापित कर यह उपलब्धि हासिल की है, जिसकी 200 वर्ष की अधीनता में भारतीय

अर्थव्यवस्था तहस–नहस हो गयी थी। 2027 तक भारत की अर्थव्यवस्था का आकार 5 ट्रिलियन डॉलर बनने एवं 2030 तक विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का अनुमान अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक संगठन द्वारा व्यक्त किया गया है। क्रय शक्ति क्षमता के आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था तीसरे स्थान पर है और विश्व का छठवा सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार है। विश्व आर्थिक मंच लंदन के आंकड़ों के अनुसार पिछले 10 वर्षों में वैश्विक अर्थव्यवस्था में 35% की वृद्धि हुई है जिसमें भारत का योगदान 9.5% का है आईएमएफ के एशिया प्रशांत विभाग के निदेशक के. श्रीनिवासन के अनुसार वर्तमान में, वैश्विक विकास में भारत का योगदान 16% है जो अगले 5 वर्षों में 18 प्रतिशत हो जाएगा। अपने दुनिया के सबसे बड़े कार्यबल, बड़े उपभोक्ता बाजार, मजबूत आर्थिक वृद्धि दर के बूते आज भारत विश्व की आर्थिक महाशक्ति बनने की और अग्रसर है। 2023 के बजट अनुमानों में भारत की वृद्धि दर 7.3 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया गया है जबकि इसी अवधि के लिए चीन की अनुमानित वृद्धि दर 5.2 प्रतिशत रहने की संभावना व्यक्त की गयी है। अर्थशास्त्रियों का मानना है कि भारत की यह वृद्धि दर आगे भी बनी रहेगी जबकि विश्व की अन्य अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि दर की प्रवृति सम अथवा नकारात्मक रहने की है गौर करने योग्य है कि भारत का क्षेत्रफल कुल वैश्विक क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत एवं जनसंख्या 17.6 प्रतिशत है तथा इतनी बड़ी आबादी की आवश्यकताओ की पूर्ति करते हुए वैश्विक विकास में इतनी बड़ी भागीदारी निभाना निश्चित ही श्लाघ्य है। भारतीय सरकार ने आजादी के अमृत काल में 2047 तक भारत को विकसित करने का लक्ष्य रखा है।

ऐतिहासिक रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था पहले से दसवीं शताब्दी तक विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था रही है संपूर्ण ऐतिहासिक कालखंड में भारत ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है यद्यपि उपनिवेशवादी कालखंड में भारत की अर्थव्यवस्था में गिरावट आई तथापि वैश्विक अर्थव्यवस्था में इनका इसका रोल महत्वपूर्ण रहा बस परिवर्तन यह था कि जहां भारत पहले निर्मित वस्तुओं का निर्यात करता था ब्रिटिश काल में कच्चे माल का निर्यातक बन गया और इसी कच्चे माल के बल पर न सिर्फ ब्रिटेन अपनी औद्योगिक क्रांति को सफल बना सका अपितु शेष विश्व के साथ व्यापार कर वैश्विक ताकत बन सका। भारत न सिर्फ वैश्विक आर्थिक संस्थानों विश्व बैंक, आईएमएफ, विश्व व्यापार संगठन, G–20 एवं क्षेत्रीय विकास समूहों ब्रिक्स, इब्सा, सार्क, एससीओ आदि का सदस्य है अपितु विश्व के अधिकांश देशों के साथ विकास के लिए द्विपक्षीय स्तर पर संलग्न है भारत सदैव विश्व की शांति, समृद्धि एवं विकास का समर्थन प्रत्येक मंच पर करता है और विश्व के कमजोर, अल्पविकसित, उपनिवेशवाद के शिकार रहे देशों के हितों का प्रतिनिधित्व प्रत्येक मंच पर करता है हिंद महासागर में अपनी महत्वपूर्ण भोगोलिक अवस्थिति के बावजूद भारत खुलेसागर की नीति का समर्थन करता है और हिंद महासागर में व्यापारिक जहाजों को सुरक्षा पूर्ण वातावरण प्रदान कर वैश्विक व्यापार में सकारात्मक भूमिका निभा रहा है जो कि भारत की विश्व अर्थव्यवस्था के विकास की प्रतिबद्धता और वसुधैव कुटुम्बकम की सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने की तीव्र इच्छा का द्योतक है। भारत की वृद्धि दर, अर्थव्यवस्था की वर्तमान प्रकृति, बड़े उपभोक्ता बाज़ार, जनसांख्यकीय लाभांश वर्तमान सरकार की आत्मनिर्भर व विकसित भारत के संकल्प व नीतियाँ, द्विपक्षीय व बहुपक्षीय संलग्नता व कुशल विदेश नीति के दृष्टिगत यह विश्वास किया जा सकता है कि भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता रहेगा जिस प्रकार अतीत में दिया है। तथा अपने पुराने आर्थिक व सांस्कृतिक गौरव को पुनः प्राप्त कर वैश्विक व्यवस्था में शीर्ष क्रम हासिल करेगा।

संदर्भ

प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति – (के ०सी श्रीवास्तव)।
प्राचीन भारत का इतिहास – (डी०एन० झा व के ०एम० श्रीमाली)।
मध्यकालीन भारत भाग 1 – (एच०सी० वर्मा)।
मध्यकालीन भारत (1526–1761) – (सतीश चन्द्र)।
आधुनिक भारत का इतिहास – (वी० एल० ग्रोवर, अलका मेहता)।
द हिन्दू, 19 अक्तूबर 2023।
Worldeconomic.com
बजट भाषण 2024–25
फोर्ब्स इण्डिया, 04–12–2023
www.imf.org.>IND